# इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर आटर्स में संसदीय कार्य मंत्रालय के तत्वावधान में आयोजित प्रदर्शनी के अवसर पर माननीय लोक सभा अध्यक्ष का भाषण

1. भारत की आजादी के 70 वर्ष पूर्ण होने एवं स्वतंत्रता संघर्ष के महत्वपूर्ण पड़ाव ''भारत छोड़ो आन्दोलन'' के 75 वर्ष पूर्ण होने पर उन क्षणों को पुनः स्मरण करते हुए एवं वर्ष 2022 में भारत की आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने के लिए उपलक्ष्य में ''नया भारत– हम करके रहेंगे'' अथवा ''न्यू इंडिया– हम बनाने का संकल्प लेते हैं।''

2. इस प्रदर्शनी को देखकर हमें भारत के गौरवपूर्ण इतिहास की याद आ रही है, उन महापुरूषों, स्वतंत्रता सेनानियों, समाज सुधारकों एवं क्रांतिकारियों का अनायास ही स्मरण हो आया है जिसका नाम सुनने मात्र में मन–प्राण में देशभक्ति एवं आत्मोत्सर्ग की भावना हिलोरें लेने लगती हैं।

3. यहां उपस्थित अधिकांश लोगों का जन्म स्वतंत्रता के बाद हुआ और उस पीढ़ी ने अपने संघर्ष, बलिदान और त्याग से स्वतंत्रता दिलाई है उसकी रक्षा करना हम सबका कर्त्तव्य है। आज़ादी हमें बहुत कठिन संघर्षों के बाद मिली है और उसमें लाखों लोगों ने अपने प्राण न्योछावर किए, अनेक प्रकार की शारीरिक, आर्थिक तकलीफों को सहन किया। राष्ट्रहित में उन्होंने हंसते–हंसते आत्मोत्सर्ग कर दिया। हमारे देश के दो हिस्से हो गए। इसका अर्थ यह है कि आज़ादी की काफी बड़ी कीमत हमें चुकानी पड़ी है और इसलिए यह स्वतंत्रता हमारे लिए यह बहुमूल्य

है और इसकी रक्षा करना, देश की एकता और अखंडता को अक्षुण्ण रखना और स्वतंत्रता को बरकरार रखना हम सबका एवं आने वाली पीढ़ियों का सबसे बड़ा कर्त्तव्य एवं जिम्मेदारी है।

4. यह प्रदर्शनी न केवल नई पीढ़ियों को उन महान आत्माओं के त्याग, बलिदान और संघर्ष से परिचित कराने का अवसर प्रदान करती है बल्कि उन्हें उनके सशक्त, सुदृढ़ एंव समर्थ राष्ट्र के निर्माण में योगदान करने के लिए प्रेरित करने के साथ–साथ उनके स्वयं के सशक्त चरित्र के निर्माण में मदद कर सकती है। मैं चाहती हूं कि अधिक–से–अधिक युवा इस प्रदर्शनी को देखें एवं अपनी गौरवपूर्ण समृद्ध एवं सांस्कृतिक परम्परा, उत्कृष्ट चेतना के स्तर को हृदय के अंतरतल से महसूस करे।

5. स्वतंत्रता के संग्राम में ऐसे अनेक स्वतंत्रता सेनानी भी हुए हैं जिनके बारे में लोग कम जानते हैं, जैसे महाराष्ट्र में बाबू गेनू, वासुदेव बलवन्त फड़के, कर्नाटक की कित्तूर रानी चेन्नम्मा, श्यामजी कृष्ण वर्मा, बंगाल की मतंगिनी हाजरा और नागालैंड की रानी गाईदिन्ल्यु। ये तो कुछ ही नाम हैं, ऐसे कई लोग हैं जिन्होंने स्वतंत्रता की बलिवेदी पर अपने प्राण न्योछावर कर दिए लेकिन गुमनाम रहे।

6. आन्दोलनों की श्रृंखला के बीच सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला एक और वर्ग था। वह था पत्रकारों, लेखकों और धार्मिक सुधारकों का वर्ग। जहां एक ओर राजा राम मोहन राय, महादेव रानाडे, स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, सर सैयद अहमद खां, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, सुब्रहमण्यम भारती, कुटिमल्लु अम्मा, एन.पी. नायर, दीनबंधु

सी.एफ. एंड्रयूज, गोपबंधु दास, सच्चिदानंद सिन्हा, पं. गणेश शंकर विद्यार्थी तथा गोपीनाथ बोरदोलोई ने समाज में जनजागरण का कार्य किया, वहीं प्रख्यात कवियों और लेखकों नामतः भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, पंडित सोहन लाल द्विवेदी, प्रेमचन्द, रामधारी सिंह दिनकर, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, श्याम लाल पार्षद ने आम जनता में राष्ट्रवाद के भाव को सींचने एवं उनमें आत्मसम्मान, दृढ़संकल्प एवं विदेशी दासता के विरुद्ध निर्णायक संघर्ष करने का सामर्थ्य पैदा कर दिया।

7. जहां तक आजादी के आन्दोलन के सांस्कृतिक पक्ष का प्रश्न है तो उसमें एनी बेसेंट, गुरू एम.एस. गोलवलरकर, हेडगेवार, वीर सावरकर एवं सतगुरू राम सिंह जैसे आध्यात्मिक गुरूओं ने इस आंदोलन का आध्यात्मिक नेतृत्व किया।

8. महाराष्ट्र में बाल गंगाधर तिलक ने स्वतंत्र होने से पूर्व ही यह उद्घोष किया था कि ''स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं उसे लेकर ही रहूंगा'' तथा अगस्त क्रांति के आह्वान के समय गांधी जी ने यह कहा कि "Let every Indian consider himself to be a free man." इन उद्घोषों ने अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध एवं उनसे मुक्ति प्राप्त करने की दिशा में एक निर्णायक भूमिका निभाई।

9. महात्मा गांधी ने सन् 1942 में ''भारत छोड़ो आन्दोलन'' में 'करेंगे या मरेंगे' का नारा देकर स्वतंत्रता की इस लड़ाई को गति भी दी। यह एक ऐसा आन्दोलन था जब अंग्रेजों को एहसास हो गया कि अब भारत में राज करना सम्भव नहीं है।

10. भारत छोड़ो आन्दोलन में देश के सभी वर्ग ने, विशेषकर महिलाओं ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया। इसकी सबसे बड़ी सफलता यह थी कि इस आन्दोलन ने देश के बुद्धिजीवी वर्ग के साथ–साथ, गांव–देहात के करोड़ों किसानों, मजदूरों और नौजवानों की चेतना को झकझोरा एवं उनको प्रत्यक्ष रूप से इस स्वतंत्रता संग्राम से जोड़ा। जहां जमींदारों ने अपनी जमीन बेच दी, किसानों ने फसल दान कर दिया, महिलाओं ने जेवर, कपड़े भी दान कर दिए, वहीं डॉक्टरों, वकीलों और प्रशासनिक अधिकारियों ने अपने–अपने तरीके से इस अभियान में जुड़े। युवाओं ने, मजदूरों और किसानों ने अपनी ओर से जोरदार विरोध दर्ज कराया जिसने विदेशी हुकूमत की नींव हिला दी जिसके कारण हम विदेशी शासन से अपनी मातृभूमि को आज़ाद करा सकें।

11. उन वीरों, महापुरुषों एवं संतात्माओं के दृष्टिकोण को समझने, अपनाने, एवं उनका प्रचार–प्रसार करने का पुनीत कर्त्तव्य भी हम सभी का है। जिस जोश, साहस, संकल्प, आस्था, दृढ़ निश्चय और आत्मविश्वास के साथ हमने आज़ादी पाई थी, उन्हीं गुणों को पुनः आत्मसात करके हम हमारे सपनों का सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम, उत्कृष्ट, सशक्त, समृद्ध एवं विश्वस्तरीय भारत बना सकते हैं।

12. हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने तब कहा था ''भारत छोड़ो''। अब हमें भारत जोड़ो आन्दोलन की जरूरत है। एक ऐसा आन्दोलन जो कश्मीर से कन्याकुमारी तक देश के सभी हिस्सों में चलाया जाए ताकि हम एक सबल और संगठित भारत का निर्माण कर सकें। हमारे स्वतंत्रता

सेनानियों ने एक ऐसे भारत का सपना देखा था जिसमें समावेशी विकास हो। हमें विकास के लाभों को देश के सभी भागों तक पहुंचाना है और अभाव को दूर करने के लिए कड़ी मेहनत करनी होगी। महात्मा गांधी जी ने कहा था – निर्धनतम वर्ग की ओर सबसे पहले ध्यान दिया जाना चाहिए, जिसे एक प्रकार से पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने दोहराया था कि पंक्ति के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचना और विकास पहुंचाना है। यह अन्त्योदय की कल्पना है।

20. जिस प्रकार 1942 से 1947 के बीच के पांच वर्षों में कड़े संघर्ष, दृढ़संकल्प, जोश, साहस, आस्था और आत्मविश्वास के साथ हमने आजादी पाई थी, उसी प्रकार का सम्मिलित प्रयास हम सबको मिलकर लेना है। सन् 2022 तक भारत को भय, भूख, भ्रष्टाचार, जाति, सम्प्रदाय एवं आतकंवाद से मुक्त एक सुदृढ़, सशक्त, सामर्थ्यवान एवं शक्तिशाली भारत के निर्माण का संकल्प है, जिसकी सिद्धि के लिए सभी को एकजुट होकर प्रयत्न करने एवं पूरा करने के लिए तैयार रहना होगा। इसमें आप युवाओं की भूमिका बहुत निर्णायक एवं प्रेरक होने वाली है।

जय हिन्द।